

स्कूल और कक्षा की संस्कृति के केन्द्र में विविधता

मधुसूदन रमेश

मैं यह आशा करता हूँ कि यह लेख विविधता के बारे में समझ विकसित करने, विविधता की स्थिति में काम करने की प्रक्रियाएँ बताने और विविधता के प्रति शिक्षा एवं शिक्षकों के व्यापक दृष्टिकोण हेतु सुझाव प्रस्तुत करने में सफल होगा।

विविधता को पहचानना

सभी के लिए शिक्षा (EFA) आन्दोलन और *सर्व शिक्षा अभियान* (SSA, 2001) के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर इस वैश्विक प्रतिबद्धता पर दिए गए महत्त्व, और इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण रूप से बच्चों को शिक्षित करने के लिए (सभी बाधाओं के बावजूद) शिक्षकों और अभिभावकों की दृढ़ता की बदौलत भारत में स्कूल अधिक विविधतापूर्ण होते जा रहे हैं। आज भाषायी दृष्टि से, सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से, क्षमताओं, विकलांगताओं और लिंग आदि के आधार पर कक्षाओं में अधिक विविधता है। विविधता को पहचानने का एक सरल ढाँचा यह है कि इसके बारे में 'प्रत्यक्ष' और 'अप्रत्यक्ष' प्रभावों के सन्दर्भ में यह सावधानी रखते हुए सोचा जाए कि दोनों की कुछ बातें एक-दूसरे में व्याप्त होंगी। प्रवास प्रत्यक्ष प्रभाव का एक रूप है, हालाँकि प्रवास की प्रकृति भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है – एक परिवार बेहतर रोजगार की सम्भावनाओं के कारण किसी महानगरीय शहर में जा सकता है, जबकि दूसरा अपने राज्य में व्याप्त अशान्ति की वजह से पड़ोसी राज्य में जा सकता है।

कक्षा की विविधता पर अप्रत्यक्ष प्रभाव के उदाहरण स्थूल कारक हैं, जैसे कि परिवारों की आकांक्षाएँ, जिनके कारण स्कूल के विकल्पों में बदलाव होते हैं या प्रगतिशील सोच, जैसे कि परिवार/माता-पिता द्वारा अपने विकलांग बच्चे को पड़ोस के 'नियमित' स्कूल में पढ़ाने का दावा करना (जिसका राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा समर्थन किया गया है)। अप्रत्यक्ष प्रभावों को पहचानना अधिक कठिन है, जो तेजी से बदलते बाजारों और नौकरियों की प्रकृति पर उनके प्रभाव, सोशल मीडिया से प्रभावित जन संस्कृति, विद्यार्थियों की नई रुचियों की एक शृंखला और इक्कीसवीं शताब्दी में पैदा हुए युवाओं की विकसित होती पहचानों से उत्पन्न होते हैं।

कक्षा में विविधता जिस गति से और जिस तरीके से आकार

ले रही है, उस पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है। शिक्षकों के रूप में हमें ज़्यादा विविधता का स्वागत करना चाहिए और इसके लिए तैयार रहना चाहिए। इससे यह व्यावहारिक प्रश्न उठता है कि हम इस नई विविधता के लिए किसी स्कूल और कक्षा की संस्कृति को कैसे निर्मित कर सकते हैं।

विविधता की स्थिति में काम करने की प्रक्रिया

शिक्षकों के रूप में, विविधता के साथ जुड़ने में न केवल उन विभिन्न परिस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना शामिल है जिनसे बच्चे आते हैं, बल्कि शैक्षणिक दृष्टि से भी इसके साथ जुड़ना शामिल है। दूसरे शब्दों में कहें तो इसका अर्थ है महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछना, जैसे कि मैं अपने सभी विद्यार्थियों के जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों को अपने शिक्षण और अधिगम में किस तरह शामिल कर सकता हूँ; और बच्चे एक-दूसरे से क्या सीख सकते हैं, न केवल वैचारिक रूप से, बल्कि जिस दुनिया में वे रहते हैं उसके बारे में सामाजिक समझ विकसित करने के लिए भी। विविधतापूर्ण कक्षा का अर्थ है बच्चों को एक-दूसरे के बारे में जानने और समाज का सामाजिक ताना-बाना समझने के अधिक अवसर। इस प्रकार की विविधता के साथ जुड़ने का अर्थ अलग-अलग प्रकार की सभी पृष्ठभूमियों के प्रति स्वीकृति दर्शाना भी है।

हाल ही में समावेशी प्रक्रियाओं पर आयोजित वेबिनार¹ में, दिल्ली के एक सरकारी स्कूल के मेंटर शिक्षक मुरारी झा ने शिक्षा की संरचना और शिक्षा प्रदान करने के तरीकों तथा बच्चों की विविध पृष्ठभूमियों के अन्तर के बारे में बात की। उन्होंने सांस्कृतिक अन्तरों में से जिस अन्तर का उल्लेख किया वह था ऐसे समुदाय में विद्यार्थियों को स्कूल आने के लिए प्रेरित करने के लिए उनकी शत-प्रतिशत उपस्थिति का जश्न मनाना, जहाँ ऐसे बच्चे हैं जो अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए काम करते हैं और अक्सर स्कूल नहीं जाते। आगे उन्होंने अपनी कक्षा द्वारा किए जाने वाले चिन्तनशील डायरी-लेखन अभ्यास की प्रक्रिया के बारे में बात की, जिससे उन्हें अपने शिक्षण की रूपरेखा तैयार करने में मदद मिलती है और बच्चों को यह महसूस होता है कि उनके शिक्षक और

उनके साथियों द्वारा उन्हें सुना और समझा जा रहा है। इस तरह की प्रक्रिया को एक को-एजेंसी (सह-गतिविधि) की प्रक्रिया के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है, जो यह दलील देती है कि सीखना शिक्षक और विद्यार्थी के बीच एक साझा प्रयास होता है।

जब किसी कक्षा की संस्कृति को-एजेंसी के विचार पर आधारित होती है, तो यह विद्यार्थियों को अपने स्वयं के सीखने के लिए जिम्मेदारी की भावना रखने का अवसर प्रदान करती है, जिससे बच्चों द्वारा इस बात को समझे जाने की अधिक सम्भावना होती है कि वे कैसे सीखते हैं। उदाहरण के लिए, अगर हम एक ऐसे विद्यार्थी के बारे में सोचें जिसे पढ़ने में कठिनाई होती है और पाठ में यह आवश्यकता है कि विद्यार्थी एक छोटी कहानी पढ़ें और सवाल के जवाब दें। ऐसी स्थिति में को-एजेंसी वाली कक्षा में सभी विद्यार्थियों के लिए खुलापन और विकल्प शामिल होंगे। सम्भावित विकल्पों में कहानी का विकल्प, पढ़ने और किसी प्रश्न का उत्तर देने में किसी विद्यार्थी को लगने वाले समय का विकल्प, पढ़ने की प्रक्रिया का विकल्प – इसे अकेले या जोड़ी में पढ़ने या टेक्स्ट-टू-स्पीच तकनीक का उपयोग करके इसे सुनने का विकल्प, प्रश्नों या प्रश्नों की संख्या का विकल्प, ऑडियो नोट के माध्यम से उत्तर देने का विकल्प आदि शामिल हो सकते हैं। यह विकल्प सभी विद्यार्थियों को मिलना जरूरी है क्योंकि केवल उन्हें विकल्प उपलब्ध कराना, जो अलग हैं, विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से यह महसूस कराएगा कि उन्हें अलग समझाया या किया गया है। ऐसी कक्षा में पढ़ने में कठिनाई का सामना करने वाले विद्यार्थी कम चिन्तित होते हैं और अपने पढ़ने और सीखने के कौशल को अपने लिए उपयुक्त गति से विकसित करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। इस प्रकार का विकल्प और खुलापन अन्य सभी विद्यार्थियों की मदद करता है क्योंकि उन्हें यह समझने का अवसर मिलता है कि वे कैसे सीखते हैं और वे सीखने के अपने खुद के अनूठे तरीके भी विकसित करते हैं। को-एजेंसी का अर्थ विद्यार्थियों को स्वतंत्र विकल्प देना नहीं है, इसमें शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष उनकी प्रक्रिया पर विचार करने और यह जानने से जुड़े सवाल शामिल होते हैं कि वे इस प्रक्रिया में किस प्रकार सुधार कर सकते हैं और इसी से सीखना एक साझा जिम्मेदारी बन जाती है।

सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं के अलावा, विविधता को समझने में विद्यार्थियों को जानने के दिन-प्रतिदिन के 'छोटे-छोटे' प्रयास (और चिन्तन) भी शामिल होते हैं। मध्यम आयु वर्ग की हाई स्कूल शिक्षिका काव्या वर्ल्ड म्यूज़िक (विश्व संगीत) सुनने की शौकीन हैं। वे अपने विद्यार्थियों द्वारा सुना जाने वाला संगीत सुनने का प्रयास करती हैं और पूरे वर्ष अलग-अलग अन्तरालों

पर इस बारे में संक्षिप्त चर्चा करती हैं। यह अपनी रुचियों के आधार पर बच्चों के साथ जुड़ने का उनका तरीका है। इससे विद्यार्थियों के साथ उनका एक तरह का अनूठा जुड़ाव बन जाता है, जैसा सम्भवतः स्टाफ़ रूम के किसी और शिक्षक का नहीं है।

विविधता में समावेशन को अपनाने का बुनियादी सिद्धान्त

कक्षा में विविधता और भिन्नता के विचार का अन्वेषण करते समय, किसी स्थान विशेष की प्रमुख विशेषता के सम्बन्ध में उस भिन्नता की संवेदनशीलता को समझना महत्वपूर्ण है। अगर हम एक सामान्य उदाहरण लें, जैसे कि लेफ्ट-हैंडेड (बाएँ हाथ से काम करने वाला) होना (10% लोग बाएँ हाथ से काम करने वाले होते हैं), तो हम पा सकते हैं कि लेफ्ट-हैंडेड विद्यार्थी प्रभावी ढंग से लिख पाने के लिए एक अलग तरीके से बैठता है; उचित प्रशिक्षण के अभाव में वह लिखावट में संघर्ष कर सकता है (और यह तथ्य कि भारत में सिखाई जाने वाली अधिकांश लेखन प्रणालियाँ बाएँ से दाएँ प्रारूप का पालन करती हैं); और स्थानों और वस्तुओं (डेस्क, कैंची, मापने के उपकरण आदि) को दाएँ हाथ के लोगों के लिए जिस तरह से डिज़ाइन किया जाता, उसके कारण उसे अनाड़ी माना जा सकता है। दुर्लभ स्थितियों में, बच्चे को बाएँ हाथ से काम करने के लिए नकारात्मक रूप से लेबल किया जा सकता है। कोई व्यक्ति, एक शिक्षक के तौर पर, आवश्यक कदम उठाकर इस समस्या के हल के लिए प्रयास कर सकता है, जैसे कि बाएँ हाथ से काम करने वालों की मदद के लिए बैठने की लचीली व्यवस्था उपलब्ध कराना, लिखावट के लिए प्रशिक्षण (और/या लिखावट के मानकों में रियायत) तथा बाएँ हाथ से काम करने को सामान्य मानने के प्रति जागरूकता निर्मित करना।

इनमें से ज्यादातर तरीके आज बाएँ हाथ से काम करने के लिए आम हो सकते हैं, लेकिन जब हम इन्हें अन्य प्रकार की भिन्नताओं, जैसे अक्षमताओं, सीखने सम्बन्धी कठिनाइयों या जेंडर सम्बन्धी पहचानों तक विस्तृत करते हैं, तो हम खुद को कहाँ खड़ा पाते हैं? बुनियादी स्तर पर, ऐसी भिन्नताओं के साथ पेश आना बाएँ हाथ से काम करने वाले लोगों के मामले में हमारे द्वारा अपनाए जाने वाले तरीके से अलग नहीं होता है। विकलांगता और अन्य अन्तरसम्बन्धी मुद्दों पर काम करने के दौरान और भी अनेक कारकों पर विचार करना पड़ता है, लेकिन शुरुआती बिन्दु एक ही होना चाहिए।

एक शिक्षक-प्रशिक्षक के रूप में अपने अनुभव से मैंने पाया है कि शिक्षक हमेशा इसे शुरुआती बिन्दु के रूप में नहीं देखते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि अक्षमताओं वाले या कठिनाइयों का सामना करने वाले बच्चों को पढ़ाने का काम सिर्फ़ विशेष

शिक्षक का ही काम माना जाता है और अभी तक इसे नियमित स्कूल शिक्षकों के काम के रूप में अपनाया जाना बाकी है। यह विचार एक गहरी जड़ जमा चुका है कि अक्षमता वाले बच्चे केवल निर्देशों या तकनीकों के किसी विशेष सेट द्वारा ही सीख सकते हैं। फिर से दोहराना चाहता हूँ, समावेशी शिक्षा की प्रक्रिया के लिए शुरुआती बिन्दु विशेष रणनीतियों या तथाकथित सर्वोत्तम प्रक्रियाओं का कोई समूह नहीं है, यह आपकी मौजूदा प्रक्रियाओं को और अधिक समावेशी बनाना और उन प्रक्रियाओं को त्यागना है जो बहिष्करण करने वाली हैं।

निम्नलिखित (परस्पर सम्बन्धित) बिन्दुओं के साथ मैं इस लेख का समापन कर रहा हूँ :

- जैसा कि समावेशी शिक्षा के कई विद्वानों ने चिह्नित किया है, समावेशी शिक्षक की मानसिकता यह होती है कि वह भिन्नता या भिन्न होने की स्थिति को व्यक्ति का मूलभूत हिस्सा मानता है। जब हम इस पर विचार करेंगे, तो हम पाएँगे कि क्षमता-आधारित श्रेणियाँ, जिनके तहत हम बच्चों को अच्छे, औसत या मन्द जैसे वर्गों में रखते हैं, लुप्त हो जाएँगी और हम उन्हें भिन्नताओं वाले व्यक्तियों

के रूप में देख पाएँगे।

- समावेशी प्रक्रिया में 'सर्वोत्तम प्रक्रियाओं' से ज्यादा हम जो जानते हैं (हमारी सामर्थ्य और रुचियों) उसमें बढ़ोतरी करने पर ध्यान देना शामिल है। जैसा कि काव्या संगीत के माध्यम से और मुरारी विद्यार्थियों के जीवन के अनुभवों के बारे में अपनी जिज्ञासा के माध्यम से करते हैं। समावेशी प्रक्रिया एक प्रकार के शिक्षाशास्त्र का विकास है जो सभी विद्यार्थियों की भागीदारी को सम्भव बनाता है और 'विकास की मानसिकता' (यह विश्वास कि प्रयास के माध्यम से कोई भी सीख सकता है और सीखने की प्रक्रिया में सुधार कर सकता है और सीखना एक जन्मजात क्षमता नहीं है) जैसे विचारों से युक्त होता है।
- समावेशन को व्यवहार में लाने के लिए, शिक्षकों को ऐसी व्यवस्था (और स्वायत्तता) की आवश्यकता है, जिससे वे शिक्षा को ऐसे वातावरण में व्यवस्थित और कार्यान्वित कर सकें, जहाँ स्वतंत्रता हो और सभी बच्चों के सीखने, उस जगह से सम्बद्ध होने, विकास करने और आत्म-सन्तुष्टिपूर्ण जीवन जीने के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्धता हो।

टिप्पणी :

- ¹ समावेशी कक्षाएँ विकसित करने के लिए शिक्षकों का समर्थन करना – इस वेबिनार को देखने के लिए, नीचे दी गई लिंक का उपयोग करें या क्यूआर कोड स्कैन करें। https://www.youtube.com/watch?v=hucxfxN_cA4&t=3063s



References

- Dweck, C., 2017. *Mindset- updated edition: Changing the way you think to fulfil your potential*. Hachette UK.
- Florian, L., 2014. *What counts as evidence of inclusive education?* European Journal of Special Needs Education, 29(3), pp.286–294.
- Florian, L., 2014. *The Sage Handbook of Special Education: Two-volume set, second edition*, SAGE Publications Inc.
- Florian, L., 2015. *Conceptualising inclusive pedagogy: The inclusive pedagogical approach in action*. In *Inclusive Pedagogy Across the Curriculum* (Vol. 7, pp. 11-24). Emerald Group Publishing Limited.
- Hart, S., Drummond, M.J. & McIntyre, D., 2004. *Learning Without Limits*, Maidenhead: Open University Press.
- Kar, B. and Sinha, S., 2021. *Disadvantages and Segregation through School Choice*. Economic & Political Weekly, 56(12), p.33.



मधुसूदन रमेश अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरू के स्कूल ऑफ़ एजुकेशन के संकाय सदस्य हैं। वे पोस्टग्रेजुएट डिप्लोमा इन एजुकेशन और मास्टर्स इन एजुकेशन प्रोग्रामों में समावेशी शिक्षा विषय पढ़ाते हैं। इससे पहले, वे स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में एक डिजाइन रिसर्चर थे। डिस्लेक्सिक होने के अपने अनुभव से लाभ उठाते हुए, उन्होंने गैर-सरकारी संगठनों के साथ विकलांगता और समावेशी शिक्षा पर शोध परियोजनाओं पर काम किया और 2019 में, स्कॉटलैंड की एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी में समावेशी शिक्षा में मास्टर्स डिग्री करने के लिए शेवनिंग स्कॉलरशिप प्राप्त की। उसके बाद से वे समावेशी प्रक्रियाओं को विकसित करने, शिक्षकों के पेशेवर विकास और विकलांग बच्चों के अधिकारों की वकालत करने के लिए प्रतिबद्ध रहे हैं। उनसे madhusudhan.ramesh@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सुबोध जोशी पुनरीक्षण : भरत त्रिपाठी कॉपी एडिटर : शहनाज़